भारत-पाक भी कर सकते हैं अपनी आबादी की मूलभूत जरूरतों की पूर्ति

(बॉर्डर पर 290 किलोमीटर की भारत एवं पाकिस्तान मैत्री व शांति पदयात्रा करके लौटे सामाजिक कार्यकर्ता संदीप पांडेय साझा कर रहे हैं अपना अनुभव)

बंग्लादेश ने साक्षरता, कुपोषण, बच्चों व महिलाओं का स्वास्थ्य, शौचालय की उपलब्धता, महिला सशक्तीकरण आदि में भारत व पाकिस्तान को छोड़ दिया है बहुत पीछे, जिसकी एक वजह है भारत-पाकिस्तान ने बेहिसाब सुरक्षा के नाम पर संसाधन खर्च किए, जिसमें खतरनाक नाभिकीय शस्त्रों का निर्माण भी शामिल है।

भारत एवं पाकिस्तान मैत्री व शांति पदयात्रा अहमदाबाद से 19 जून, 2018, को शुरू होकर 29 जून को ग्यारह दिनों और 250 किलोमीटर के पश्चात नदेश्वरी माता के मंदिर पर समाप्त हुई। हालांकि पहले दिन अहमदाबाद पुलिस ने गांधी आश्रम से प्रारम्भ होते ही यात्रियों को 3 घंटों के लिए रानिप पुलिस चौकी पर हिरासत में रखा और आखिरी दिन सीमा सुरक्षा बल ने यात्रा को नदेश्वरी माता मंदिर से नडा बेट सीमा तक 25 कि.मी. चलने की अनुमति नहीं दी।

गांधी आश्रम से शुरू होने के बाद यात्रा अडालज, कलोल, छत्राल, नंदासन, मण्डाली, मेहसाणा, बोकरवाडा, सिही, बलिसणा, पाटन, दुनावडा, रोडा, लोटाणा, थरा, देवदरबार, दियोदर, कुवाला, भाभर, दुधवा, सुईगाम होते हुए नदेश्वरी माता मंदिर पर समाप्त हुई।

पदयात्रा भारत और पाकिस्तान की सरकारों से यह मांग करने के लिए निकाली गई थी कि सीमा पर दोनों तरफ के सैनिकों का मरना बंद हो। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारत व चीन के सैनिकों ने 21 जून, 2018 को पूर्वी लद्दाख में दौलत बेग ओल्डी नामक स्थान पर संयुक्त योगाभ्यास किया। इस तरह का दोस्ताना माहौल भारत-पाकिस्तान की सीमा पर भी क्यों नहीं निर्मित किया जा सकता?

दोनों मुल्कों को एक-दूसरे के नागरिकों को सीमा पार यात्रा के लिए आसानी से वीजा देना चाहिए। सम्भव हो तो बच्चों, बिमार, छात्रों, पत्रकारों, प्राध्यापकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, धार्मिक नेताओं व मजदूरों के लिए वीजा की अनिवार्यता खत्म कर देनी चाहिए। गुजरात से पाकिस्तान जाने का एक रास्ता नडा बेट अथवा खावडा में खुलना चाहिए। 1972 तक सुईगाम से नगरपारकर तक जो बस सेवा सक्रिय थी उसे बहाल किया जाना चाहिए।

वैसे खावडा मार्ग खुलने से उन मछुआरे परिवारों को बहुत राहत मिलेगी जिनके सदस्य पाकिस्तानी जेलों में बंद हो जाते हैं और फिर सालों वहां सडते रहते हैं। कई बार तो यहां मछुआरा परिवारों को मालूम ही नहीं पडता कि उनका कोई सदस्य सीमा पार जेल में है।

हाल ही में देवाराम बरैया नामक गुजरात के मछुआरे का करांची जेल में देहांत हो गया और आज तक उसके परिवार को न तो दोनों सरकारों में से किसी का कोई संदेश मिला है और न ही देवाराम का मृत शरीर। गुजरात के दो अन्य मछुआरों दाना अर्जुन चौहान व रामा मानसी गोहिल को गम्भीर रूप से बीमारी की हालत में वाघा सीमा पर छोडा गया है।

बीमारी की हालत में सीमा के दोनों पार हजारों कि.मी. की यात्रा इनके लिए कितनी कष्टदायक होगी, इसकी कल्पना ही की जा सकती है। दोनों सरकारों को अपनी जेलों में दूसरे देश के कौन से नागरिक बंद हैं उनकी सूचियों को सार्वजनिक करना चाहिए और इनको जल्द से जल्द रिहा कर छोटे से छोटे मार्ग से वापस भेजना चाहिए।

जिनके पास पासपोर्ट या वीजा नहीं है उनके लिए रोज शाम वाघा-अटारी सीमा पर होने वाले सैन्य अभ्यास की जगह एक शांति पार्क बनाया जाना चाहिए, जिसमें दो घंटों के लिए दोनों ओर के नागरिकों को उनका एक पहचान पत्र जमा कराकर व पूरी सुरक्षा के इंतजाम के साथ खुलकर मिलने की छूट दी जानी चाहिए। ऐसा शांति पार्क जहां जहां सीमा पर आने-जाने की रास्ता है वहां वहां बनाया जाना चाहिए। उत्तर कोरिया से प्रेरणा ग्रहण कर भारत, चीन व पाकिस्तान को अपने अपने नाभिकीय शस्त्र खत्म कर एशिया को नाभिकीय शस्त्र मुक्त क्षेत्र घोषित करना चाहिए ताकि लोगों पर कभी इस भयानक शस्त्र के चलने का खतरा न रहे।

पदयात्रा का मनोबल तब और मजबूत हो गया जब प्रधानमंत्री की पत्नी जशोदाबेन 23 जून को बलिसणा के समीप यात्रियों से आधे घंटे के लिए मिलने पहुंचीं। उन्होंने यात्रा के उद्देश्य को अपना समर्थन प्रदान किया। उन्होंने विश्व शांति की वकालत करते हुए भारत और पाकिस्तान के बीच भी शांति स्थापित हो ऐसी मनोकामना की।

सीमा पर सैनिकों के मरने को उन्होंने अनावश्यक बताया। जशोदाबेन के यात्रा को समर्थन देने से जो उग्र राष्ट्रवादी मानसिकता वाले लोग पदयात्रा के उद्देश्यों पर सवाल ख?ा कर रहे थे, वे शांत हो गए। जशोदाबेन व उनके भाई अशोक मोदी ने यात्रा के साथ चले रहे हस्ताक्षर अभियान पर भी अपने दस्तखत किए।

पदयात्रा के बलिसणा पहुंचने पर आयोजित सभा में यह भी मांग रखी गई कि पाकिस्तानी दूतावास का एक वीजा कार्यालय अहमदाबाद में भी होना चाहिए, ताकि गुजरात के लोगों को दिल्ली जाकर वीजा लेने व सीमा के दोनों ओर लम्बी यात्रा कर सिंध पहुंचने की कठिनाई से निजात मिल सके।

26 जून को दिन के समय पदयात्रा देवदरबार के एक मुदिर में रुकी, जहां के महंथ बलदेवनाथ बापू लोहाणा ठक्कर बिरादरी के धार्मिक गुरू हैं और उनके पांच सौ अनुयायी सीमा पार रहते हैं। अक्टूबर 2017 में बलदेवनाथ बापू पहली बार पाकिस्तान गए व एक माह सलेमकोट, हैदराबाद व करांची रहे। उन्हें वहां जो चंदा मिला उससे सलेमकोट में एक अस्पताल निर्माण शुरू किया है।

उन्होंने पूछने पर यह भी बताया कि अपने एक माह के प्रवास के दौरान न तो उन्हें किसी ने इस बात की शिकायत की कि पाकिस्तान में हिंदुओं का बलात इस्लाम में धर्म परिवर्तन करा दिया जाता है और न ही कोई मंदिर तोड़े जाने की कोई शिकायत उन्हें मिली। उन्होंने यह भी खुलासा किया कि पाकिस्तान में ऐसी चर्चा है कि 2020 या 2022 तक सुईगाम-नगरपारकर मार्ग चलने लगेगा।

इससे पहले पदयात्रा लोटाणा में सदाराम बापू से आशीर्वाद लेने पहुंची जिनकी उम्र सौ वर्ष से ऊपर है और जिन्होंने इस इलाके में साम्प्रदायिक सद्भावना को मजबूत बनाए रखने का काम किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुजरात-सिंध की सीमा पर धार्मिक गुरुओं की शांति व सद्भाव बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

पदयात्रा का औपचारिक समापन कार्यक्रम 30 जून को अहमदाबाद में रखा गया, जिसमें पाकिस्तान से सामाजिक कार्यकर्ता करामत अली व सईदा दीप भी इंदरनेट के माध्यम से शामिल हुईं। उद्यमी पियूष देसाई जो वाघ बकरी चाय कम्पनी के मालिक हैं पदयात्रा से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने तय किया कि प्रत्येक सप्ताह गांधी आश्रम में शांति व सद्भावना के विचार को मजबूत करने के लिए बैठकों को आयोजन होगा।

पदयात्रा की ओर से नरेन्द्र मोदी को एक पत्र लिखा गया है कि जिस तरह भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दिल्ली से लाहौर बस सेवा शुरू कर वाहवाही लूटी, उसी तरह यदि वे चाहें तो अहमदाबाद से करांची बस सेवा शुरू कर सकते हैं।

आजादी के बाद भारत के तीन टुकडें हुए। इनमें से आज बंग्लादेश ने सामाजिक मानकों जैसे साक्षरता, कुपोषण, बच्चों व महिलाओं का स्वास्थ्य, शौचालय की उपलब्धता, महिला सशक्तीकरण, प्रति परिवार बच्चों की संख्या आदि में भारत व पाकिस्तान को बहुत पीछे छोड दिया है, जिसकी एक वजह यह भी है कि भारत व पाकिस्तान ने बेहिसाब सुरक्षा के नाम पर संसाधन खर्च किए हैं, जिसमें खतरनाक नाभिकीय शस्त्रों का निर्माण भी शामिल है। जबकि बंग्लादेश ने समझदारी पूर्वक अपने संसाधनों का इस्तेमाल अपने बच्चों व महिलाएं की स्थिति को ठीक करने के लिए किया।

एक आम इंसान की सुरक्षा तो उसकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति से ही होती है। नाभिकीय शस्त्र तो समाज के एक संभ्रांत तबके की सुरक्षा हेतु बनाए गए हैं। एक नाभिकीय शस्त्र किसी कुपोषित बच्चे को भुखमरी से व किसी किसान को आत्महत्या से कैसे रोक सकेगा? यदि हम अपनी गरीब आबादी की मूलभूत आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर सकते तो नाभिकीय शस्त्रों का उनके लिए कोई मतलब नहीं है।

भारत और पाकिस्तान को अपने लम्बित मुद्दों को सौहार्दपूर्ण तरीके से वार्ता द्वारा हल कर लेना चाहिए और मैत्री व शांति को एक मौका देना चाहिए।

सख्त जान बेटियाँ !

सुजाता

जब तक गर्भ में ही मार न दी जाएँ, मरती नहीं बेटियाँ आसानी से। कितने ही किस्से सुने हैं कि घूरे के ढेर पर बच्ची मिलती है। किसी ने जन्मते ही मरने के लिए छोड़ दी होती है किसी सुनसान में कुत्तों के खाने के लिए। दो बेटियों, एक बेटे की माँ अपनी एक मामी पर मुझे आज भी शक् है कि अपनी एक नवजात को उन्होंने लेटेलेटे दूध पिलाते हुए जानते बूझते मार दिया। नानी से पूछा था मैंने कि ऐसा कैसे हुआ। नानी ने कहा पता नहीं, वह बताती है कि दूध से भरा स्तन था और मैं सो गई, बच्ची की नाक उसी के नीचे दब गई और वह मर गई। किसी सहेली के यहाँ आने वाली हाउसहेल्प के साथ अक्सर उसकी एक बेटी आती थी। एक दिन आई और हुलस कर बोली आण्टी मेरी बहन बच गई ! सहेली ने पूछा क्या मतलब ? तो उसने बताया कि एक और बहन पैदा हुई थी। कभी मम्मी उसे पंखे के नीचे नंगा सुला देती थी। कल तो रात को दरवाज़े पर छोड़ दिया था कि कुत्ता खा जाएगा। लेकिन सुबह गए तो वह एकदम ठीक ठाक थी आण्टी। मेरी बहन बच गई !

इस देश में दहेज के लिए बेटियाँ जलाई जाती रहीं। वे दबी नहीं। मूर्खाओं में इतना जीवट है और ऐसी ललक कि शादी करना और बच्चे जन्मना नहीं छोड़ा। अब भी सुनती हैं अपने बापों, पतियों और भाइयों की। उनकी एजेण्ट्स बनी माँ-दादी की। इस देश में बलात्कारों की तो जैसे बाढ आ चुकी है। नौकरी करके लड़की रात के दस बजे लौट रही हो या घूमने ही निकली हो रात के आठ बजे। बलात्कार करने वाले भेड़िए अब छोटी बच्चियों को भी नहीं छोड़ रहे। मैं कभी कभी सुन्न पड़ जाती हूँ कि आखिर रेप पर कितने आर्टिकल्स लिखे जा सकते हैं ! किसी दिन का कोई अखबार ऐसा नहीं जिसमें बलात्कार की खबर न हो ! चार साल की बच्ची हो या आठ महीने की, उसका हाइमेन क्षत-विक्षत है। और इनकी हिम्मत देखिए, लड़कियों की, कि न तो स्कूल में पढना बंद कर रही हैं, ना नौकरी करना छोड़ रही हैं, न देर-सबेर घूमना-फिरना छोड़ रही हैं,न लड़कों से दोस्ती करना छोड़ रही हैं, न शादी-ब्याह करना छोड़ रही हैं, न घरों में भाँडे-बर्तन मांजना, न राखी बांधना न माँग भरनान बच्चे पैदा करना और पालना छोड़ रही हैं, न मोल-भाव करके सब्जी-भाजी खरीदना और त्योहारों पर घर सजाना, ससुरालियों का स्वागत करना छोड़ रही हैं, न अपने धार्मिक रीति-रिवाज़ों का पालन करना छोड़ रही हैं।

लालसा ऐसी है जीने की कि सर पर लटकते नंगे-भूखे लिंगों का इन्हें भय नहीं। कठुआ, उन्नाव, सूरत, सासाराम, मंदसौर ...ये धर्म का नाम लेंगे,धर्म की चिंता करेंगे, तुम्हारी नहीं। इन्हें बच्चियों की नहीं, अपने धर्म की चिंता है। और इस वक़्त जबकि इस देश की सब औरतों को सब काम ठप्प कर देना चाहिए था देश, दुनिया, जहान का, इस वक़्त जब औरतों को एलानिया हड़ताल कर देनी चाहिए थी कि- हम न शादी करेंगे, न बच्चे पैदा करेंगे, न घर के काम करेंगे, न तुम्हारा धर्म मानेंगे, न तुम्हारे त्योहार मनाएंगे,न तुम्हारे दफ्तर चलेंगे, न स्कूल, न कॉलेज। न तुम्हारे खेतों में हाथ लगाएंगे, न तुम्हारी रेहड़ी-खोंचे के लिए छोले उबालेंगे, प्याज काटेंगे, न बेलेंगे, न काढेंगे, न परोसेंगे, न हसेंगे, न गाएंगे, न तुमसे प्यार मागेंगे न तुम्हारे गुस्से को भुगतेंगे, न तुम्हारा बिस्तर सजेगा न तुम्हारी कविताएँ, न तुम्हारे गीत, नाटक और न तुम्हारी फिल्में। हम इस सृष्टि से अपना सारा श्रम, सारा समर्पण, सारा प्रेम, सारा त्याग खींच लेंगे वापस ।

लेकिन ठीक इस वक़्त सब सामान्य है। हम उतनी ही खुश हैं। उतनी ही त्यागमयी। उतनी ही प्रेम में डूबी हुई। उतनी ही गाफ़िल। उतनी ही अपने घर-बार में मस्त। उतनी ही एक से दूसरी बेपरवाह। कि जितना सत्ताएँ, व्यवस्थाएँ और संरचनाएँ चाहती हैं कि हम रहें ! सख्त जान ! सहते जाने के लिए। बस्स ! बस्स! कहकर चिल्लाने और फट पड़ने के लिए, लड़ने के लिए नहीं?

लिंगों के विराट साम्राज्य में योनियाँ सिर्फ खून के आँसू रोने के लिए हैं क्या ? योनियों का सम्मानजनक अस्तित्व लिंगों की दया पर है क्या ?

अगर नहीं, तो समझिए, इस देश को अब ज़रूरत है औरतों की अनिश्चित्कालीन हड़ताल की ! परिवार ठप्प !.कानून-व्यवस्था ठप्प ! देश ठप्प ! दुनिया ठप्प !

वाट्सअप की अफवाह से अब तक गई हैं 29 जानें

सस्ते स्मार्टफोन और सस्ता मोबाइल डेटा पैकेज दुनिया में पहली बार लाखों भारतीयों को फर्जी न्यूज से अवगत करवा रहा है, जिससे गंवानी पड़ी रही है निर्दोष लोगों को अपनी जान

सोशल नेटवर्किंग साइट्स जहां सूचनाओं के आदान—प्रदान का एक बड़ा माध्यम और अपनी बात लोगों तक पहुंचाने का जरिया बनी हैं, वहीं यहां फैलाई जाने वाली झूठी खबरों के चलते कई लोगों की जानें तक चली जाती हैं। इसी नक्शेकदम पर व्हाट्सअप यूनिवर्सिटी चल रही है, यहां बघारे जाने वाले ज्ञान और फेक सूचनाओं के कारण पिछले साल मई से अब तक 29 लोगों की मौत हो चुकी है, मगर इसके खिलाफ अब तक कोई कड़ा एक्शन नहीं लिया गया है।

द प्रिंट में प्रकाशित शिवम विज की रिपोर्ट के मुताबिक व्हाट्सअप के जरिए फैली झूठी सूचनाओं के चलते हुई मौतों के पीछे कोई राजनीतिक कारण भी जिम्मेदार नहीं है। इन हत्याओं के लिए कोई हिंदू-मुस्लिम विवाद, यहाँ तक कि जातिगत विवाद भी नहीं है। कोई भारत-पाकिस्तान नहीं, कोई भाजपा-कांग्रेस नहीं, कोई जिहाद या नक्सलवाद नहीं, कोई आरएसएस या कश्मीर नहीं, राजनेताओं द्वारा कोई बयान और प्रतिवाद भी नहीं है।

यह एक सेक्सी कहानी नहीं है। इस मुद्दे को राष्ट्रीय आक्रोश का मामला बनने से पहले कितने और लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ेगी? हर किसी को यह संदेह है कि बारंबार ऐसी घटनाएं होने के बाद पीड़ितों की संख्या दो-तीन महीनों में 100 तक बढ़ सकती है।

अफवाह बच्चे चोरी करने वाले एक गिरोह के बारे में है। वे आते हैं, आपके बच्चे को उठाते हैं और भाग जाते हैं। तमिलनाडु से त्रिपुरा तक अफवाह देश भर में एक जंगल की आग की तरह फैल गई है। इसके लिए व्हाट्सएप को धन्यवाद, जो लोगों का पसंदीदा संदेशवाहक है और जो पहली बार इंटरनेट को सामने ला रहा है। सस्ते स्मार्टफोन और सस्ता मोबाइल डेटा पैकेज दुनिया में पहली बार लाखों भारतीयों को फर्जी न्यूज से अवगत करवा रहा है।

संदेश आमतौर पर चेतावनी देते हैं कि बच्चों का अपहरण करने वाले सैकड़ों लोग हमारे राज्य में प्रविष्ट हो गये हैं। बाहरी लोगों से सावधान रहें, वे अंग व्यापार में लिप्त एवं बच्चों को चुराने वाले हो सकते हैं या इसी तरह के अन्य कार्य करने वाले हो सकते हैं। ये संदेश आमतौर पर एक ऐसे वीडियो के साथ आते हैं जो एक सीसीटीवी फुटेज की तरह दिखता है, जिसमें मोटरसाइकिल पर सवार लोग एक बच्चे को उठा ले जाते हैं।

यह वीडियो कराची, पाकिस्तान का है, जहाँ इसे बच्चों के अपहरण के खिलाफ लोगों को शिक्षित करने के लिए रिकॉर्ड किया गया था। वीडियो के अंतिम भाग को संपादित कर दिया गया है और यह अब पूरे भारत में संचारित हो रहा है।

तत्काल समाधान स्पष्ट है। इसे एक बड़े पैमाने पर जवाबी-सूचना अभियान की आवश्यकता है जो हर भारतीय तक पहुँच जाए। त्रिपुरा में फैली अफवाहों को दूर करने के लिए सरकार द्वारा एक उद्घोषक को किराए पर लिया गया लेकिन लोगों ने उसे बच्चा चोर समझ कर मार दिया। यह आपको आवश्यक जवाबी-सूचना अभियान की कितनी जरूरत है के पैमाने के बारे में बताता है। राज्य सरकारें और स्थानीय पुलिस जागरूकता पैदा करने की कोशिश कर रही हैं, लेकिन यह कार्य सच में बहुत बड़ा है।

अगर प्रधानमंत्री इन व्हाट्सएप अफवाहों का शिकार न होने का अनुरोध करते हैं तो इससे कुछ फर्क पड़ सकता है। लेकिन कोई भी उनसे ऐसा करने के लिए नहीं कह रहा है। नरेंद्र मोदी के समक्ष यह पूछने में कई हफ्ते लग जाते हैं कि किसी मुद्दे पर प्रधानमंत्री चुप क्यों हैं।

गृहमंत्री राजनाथ सिंह द्वारा भी इस बारे में एक शब्द नहीं कहा गया है। क्या गृह मंत्रालय ने राज्यों को कोई सलाह दी है? फिलहाल हमें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। सूचना और प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद ने अब तक क्या किया हैं? जब उन्होंने कैम्ब्रिज एनालिटिका डेटा चोरी घोटाले के बारे में सुना तो उन्होंने बहुत जल्दबाजी दिखाई थी और कहा था कि वह मार्क जुकरबर्ग को इस मामले में भारत बुला लेंगे। यहाँ एक ऐसा मुद्दा है जिसने 31 जानें ले ली हैं और क्या रविशंकर प्रसाद ने अभी तक एक भी शब्द कहा है? क्या वह इस पर मार्क जुकरबर्ग को बुलाने की योजना बना रहे हैं?

भारत व्हाट्सएप का सबसे बड़ा बाजार है और फेसबुक के द्वारा आधिकारिक मेसेंजर के बारे में कुछ भी कहने के लिए कोई प्रवक्ता नहीं है। हालांकि उन्होंने व्यापार खाते शुरू कर दिए हैं। भारत में सभी व्हाट्सएप उपयोगकर्ताओं को यह कहने के लिए कि वे इन अफवाहों का शिकार न हों, बड़े पैमाने पर अलग-अलग भाषाओं में संदेश भेजना उनके लिए कितना मुश्किल है? दुनिया भर में प्रचलित कंपनी सो रही है और अपने मुख्य केन्द्र अमेरिका से यह बहाना कर रही है कि लोग उनके मंच (मेसेंजर) पर क्या करते हैं इसके लिए कंपनी जम्मिेदार नहीं है। यह एक ढीला बर्ताव है और इस तरह से काम नहीं किया जाता है।

यहां घटनाओं की एक समय सारिणी है और इसमें केवल मौतों की गिनती की गयी है, न कि उन घटनाओं की जहां लोग हमले के बाद बच गए थे।

2018 अब तक:

10 मई-तमिलनाडु में 2 मारे गए।

23 मई-बेंगलुरू में एक आदमी की हत्या।

मई 2018-आंध्र और तेलंगाना में अलग-अलग घटनाओं में 6 लोग मारे गए।

8 जून- असम में 2 लोगों की पिटाई से मौत।

8 जून-औरंगाबाद, महाराष्ट्र में 2 लोगों की हत्या।

13 जून-पश्चिम बंगाल के माल्टा में आदमी की मौत।

23 जून-पश्चिम बंगाल के पूर्वी मिदनापुर में आदमी की मौत।

26 जून-45 वर्षीय भिखारी महिला अहमदाबाद, गुजरात में मारी गयी।

28 जून-त्रिपुरा में एक दिन में 3 लोगों की हत्या कर दी गई, जिनमें अफवाहों को दूर करने के लिए सरकार द्वारा किराए पर रखा गया एक व्यक्ति भी शामिल था।

1 जुलाई- महाराष्ट्र के धुले जिला में 5 लोगों की हत्या।